पर-दादी ने सुनाई मंडई दिन की कहानी

लेखन: वेर्डा क्रास, चित्र: गेल अवन्स
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पर-दादी ने सुनाई मंडई दिन की कहानी

जून का महीना खत्म होने वाला है, और मिसूरी में, पड़झड़ में बोई गई गेहूँ की फसल तैयार है। लॉरा और उसका भाई रॉबी, अर्से से उस दिन का इन्तज़ार करते रहे हैं जब गेहूँ के दानों को थ्रैशर मशीन की मदद से अलग किया जाएगा।

उस दिन सुबह पौ फटने से लेकर सूरज के डूबने तक कई ख़ास और मज़ेदार चीज़े होती रहती हैं - सारे दोस्त, अड़ौसी-पड़ौसी इकट्ठा होते हैं, भाप के इंजन से चलने वाला थ्रैशर (मंडई मशीन) सबको मोहता है, और उस दिन जो खाना पकता है उसकी महक और स्वाद गज़ब का होता है, और अंत में ताज़ी पुआल से भरे गद्दों की आरामदायक खुशबू दिल को खुश कर देती है।

पर-दादी असल में कोई और नहीं लेखिका वेर्डा क्रास ही हैं। 1900 के आरंभिक वर्षों में एक खेतिहर परिवार के बच्चे के जीवन का वे विलक्षण चित्रण करती हैं।

गेल अवन्स के हल्के रंगों में बने चित्र उस पुराने महत्वपूर्ण दिन को जीवन्त कर देते हैं।

पर-दादी ने सुनाई मंडई दिन की कहानी

लेखन: वेर्डा क्रास

चित्र: गेल अवन्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरी बहन बर्नीस को, जिसने मुझे लिखने को प्रोत्साहित किया - वी.सी.

मैं निम्नोक्त लोगों ओर संस्थाओं के प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ, जिन्होने बीसवीं शताब्दी के आरंभ में खेतीबारी के तौर-तरीकों और उस वक़्त काम में लिए जाने वाले औज़ारों और मशीनों की जानकारी अपनी बातचीत, प्रदर्शिनियों व प्रकाशनों द्वारा मुझे दी:

आर्ची हब्बर्ड, संस्थापक फायेत गिलफर्ड म्यूज़ियम, गिलफर्ड न्यू यॉर्क; मार्ज जैनसन, सचिव न्यू यॉर्क एंजिन एसोसिएशन, वेनेडाइगुआ, न्यू यॉर्क; किन्ज़र्स, पैन्स्लिवेनिया के अनुभवी इंजीनियर; तथा लैंकैस्टर, पैन्सिलवेनिया की स्टेम्मा पब्लिशिंग कम्पनी। जे. हेयस् व उनके सुन्दर गुलाबों और जिम को भी शुक्रिया। - जी.ओ.
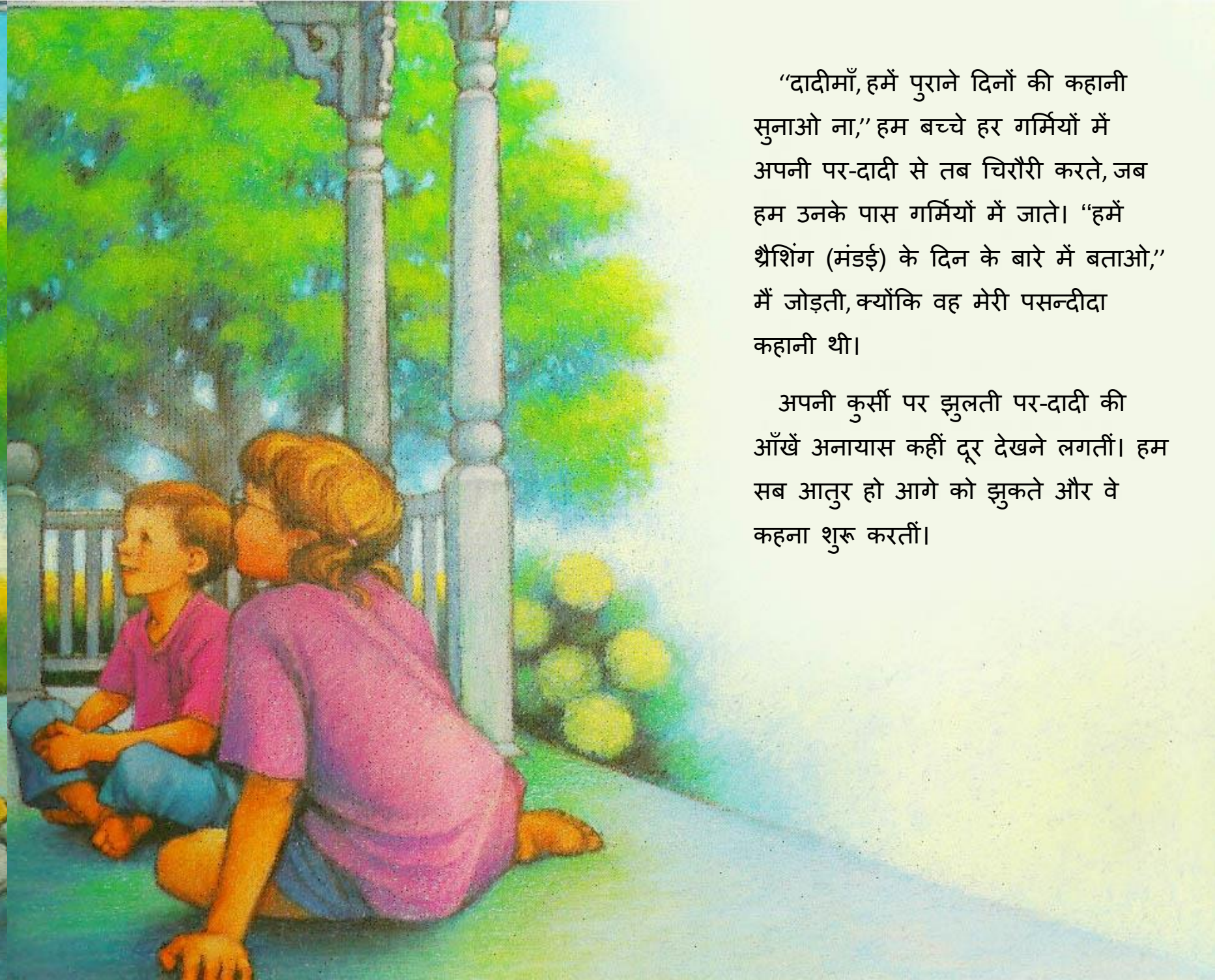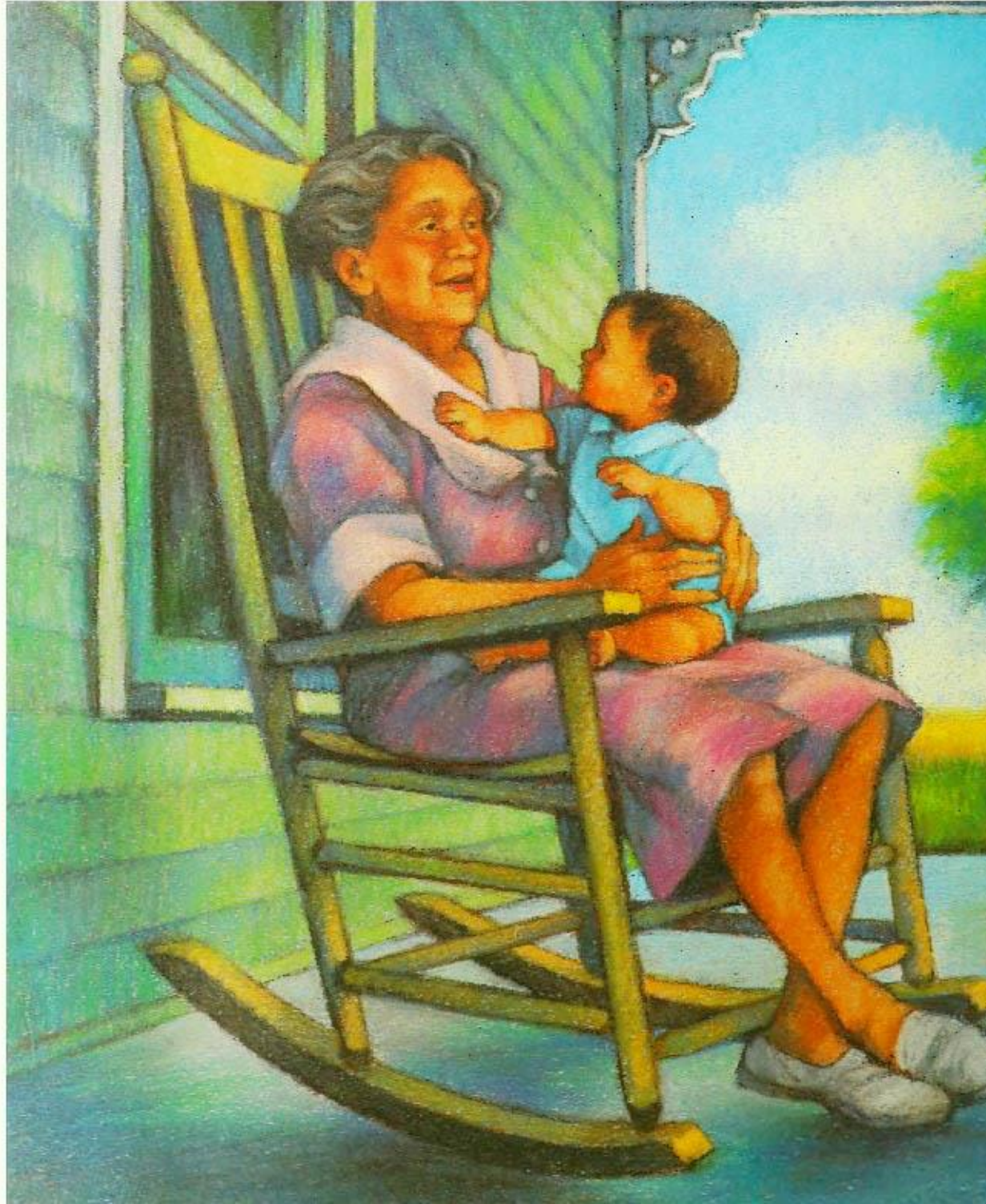
"दादीमाँ, हमें पुराने दिनों की कहानी सुनाओ ना," हम बच्चे हर गर्मियों में अपनी पर-दादी से तब चिरौरी करते, जब हम उनके पास गर्मियों में जाते। "हमें थ्रैशिंग (मंडई) के दिन के बारे में बताओ," मैं जोड़ती, क्योंकि वह मेरी पसन्दीदा कहानी थी।

अपनी कुर्सी पर झुलती पर-दादी की आँखें अनायास कहीं दूर देखने लगतीं। हम सब आतुर हो आगे को झुकते और वे कहना शुरू करतीं।

सुबह नाश्ते के तुरन्त बाद ही मैंने भाप के इन्जन को हमारे खेत की सड़क पर बढ़ आते देखा। मिस्टर स्नाइडर उसे चला रहे थे। इंजन के पीछे बड़ा-सा थ्रैशर (मंडई यंत्र) था। और उसके भी पीछे थी पानी ढ़ोने वाली बड़ी गाड़ी जिसे घोड़े खींच रहे थे। इस गाड़ी को मिसेज़ स्नाइडर और उनका बेटा चला रहे थे।

"आओ भी!" मैंने रॉबी को चिल्ला कर कहा। हालांकि थ्रैशर अभी काफ़ी दूर था।

रॉबी दौड़ता हुआ सड़क पर आया, उसने पहले कभी भाप का इंजन देखा ही नहीं था। "थ्रैशर को घोड़े क्यों नहीं खींच रहे?" उसने जानना चाहा।

पिता हमारी घोड़ा-गाड़ी से बस लौटे ही थे। वे घोड़ों की रस्सियों को घर के सामने उगे पेड़ से बांध रहे थे। वे रॉबी की बात सुन हंसे। "थ्रैशर को घोड़ों की ज़रूरत नहीं है, उसे भाप का इंजन खींचता है। मिस्टर स्नाइडर उसे चला रहे है। वे इंजन के अलाव के पीछे लगे एक तख्ते पर खड़े हैं।" पिता दरअसल सुबह-सुबह ही बर्फ़ वाले के पास से बर्फ़ की बड़ी-सी सिल्ली ले कर लौटे थे। "लॉरा, पेड़ के नीचे लकड़ी का बड़ा वाला टब रखो, इस बीच मैं बर्फ़ की सिल्ली उतारता हूँ," उन्होंने मुझे कहा। "दिन ख़त्म होगा उसके पहले हमें बर्फ़ की एक-एक इंच की दरकार होगी।"

उन्होंने बर्फ़ की सिल्ली टब में रखी। मैंने उसे मोमजामे और पुराने कम्बलों में लपेट दिया, ताकि वह जल्दी पिघले नहीं। शिंकजी और ठंडी चाय में बर्फ़ का इस्तेमाल होना था। क्योंकि गाँव और खेतों में बर्फ़ पहुँचाई नहीं जाती थी हमारे पास आइस बॉक्स (बर्फ़ को ठंडा रखने वाला बक्सा) नहीं था। हम तो चीज़ों को ठंडा रखने के लिए उन्हें पानी से भरी नांदों में रखते थे।

"आ गई!" रॉबी चिल्लाया। "थ्रैशर मशीन आ गई!" पर उसकी चीख इंजन के शोर में लगभग डूब ही गई।

वह खेत का फाटक खोलने दौड़ा ताकि मिस्टर स्नाइडर मशीन को खलिहान के पास ला सकें। पिता घोड़ों को संभालने में उलझ गए, क्योंकि वे थ्रैशर और भाप के इंजन के शोर से बिदक गए थे। बंधे होने के कारण वे भाग तो नहीं सके थे पर डर ज़रूर गए थे। पिता ने उनसे धीमी आवाज़ में बात की, कुछ ही देर में वे शान्त हो गए।

जून का अंत था और मिसूरी में सर्दियों का गेहूँ तैयार था। रॉबी और मैं अर्से से थ्रैशिंग (मंडई) के दिन की राह तकते रहे थे। मुझे अब वह समय भी याद आया जब पिता ने पतझड़ में गेहूँ बोया था। ठंडा मौसम शुरू हो उसके पहले पौध थोड़ी-सी बढ़ी थी, पर तब सर्दियों भर वह बर्फ़ के नीचे दबी थोड़ी-थोड़ी बढ़ती रही थी। बसन्त में पौधे गहरे हरे रंग के हुए और गेहूँ की बालियाँ तेज़ी से बढ़ीं। जून के मध्य तक गेहूँ के दाने गोल-मटोल और भूरे हो चुके थे।

दो सप्ताह पहले ही तो पिता ने फसल की कटाई की थी और उसे बंडलों में बांध दिया था। बंडल बांधने की एक खास मशीन होती है, जिसे बाइन्डर कहा जाता है। हम बाइन्डर के पीछे-पीछे पड़ौस के दो पुरुषों के साथ चले और हमने बंधे बंडलों की ढेरियाँ बना दी थीं।

रॉबी और मैंने भी मदद की थी। हमने सुनिश्चित किया वे ढेरियाँ ठीक से खड़ी हों और उन्हें ढंग से ढक दिया जाए, ताकि बरसात का पानी नीचे बह जाए।

अगर हम इसमें कोई गलती करते तो बालियों के दाने गीले हो जाते और अंकुरित होने लगते। पर हमने अपना काम ठीक से किया था।
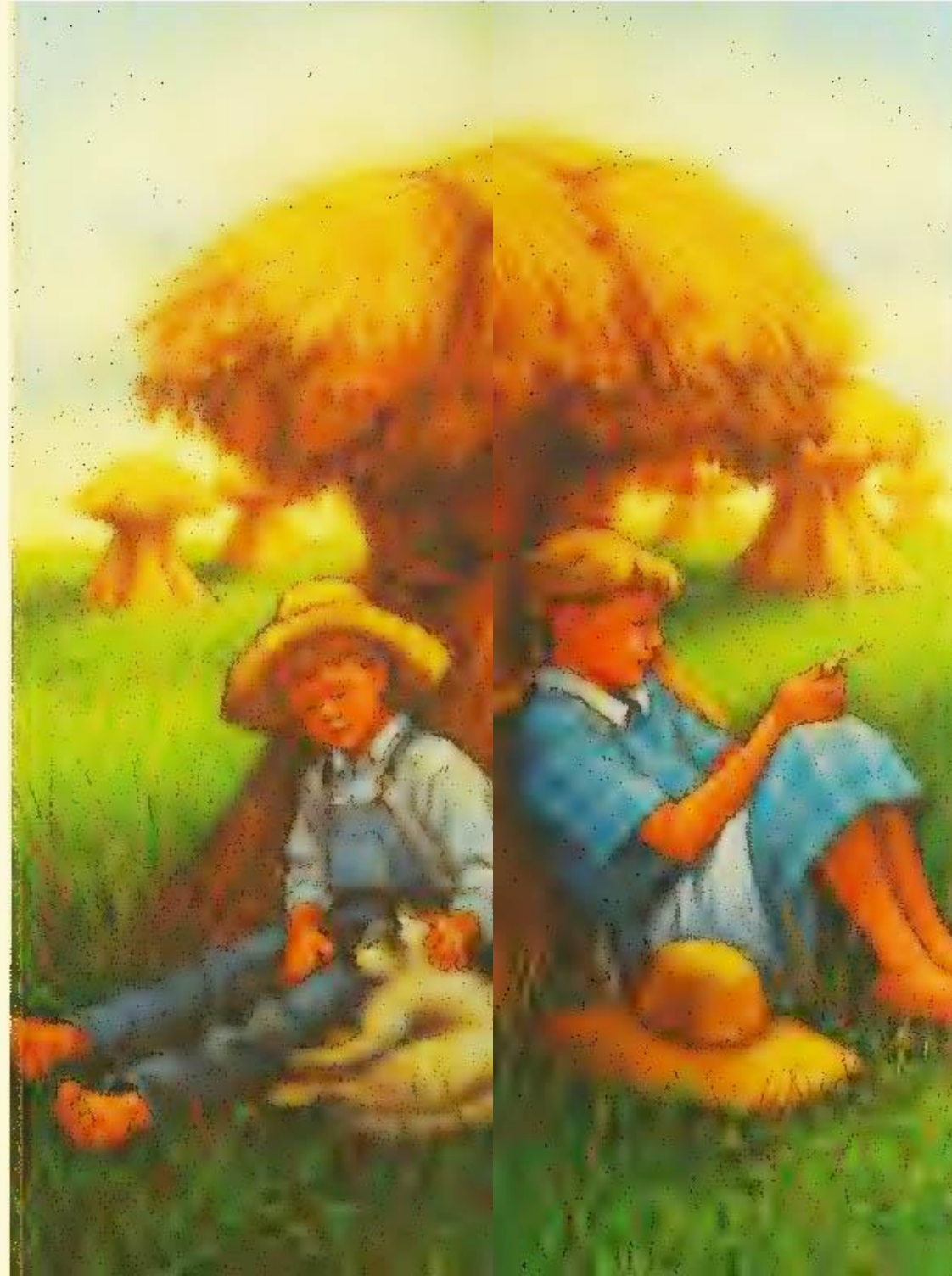
गेहूँ की कटाई तब ही हो सकती है जब सुबह की ओस सूख जाए और रात की ओस पड़नी शुरु न हुई हो। सो, बारह एकड़ में उगे गेहूँ को काटने और उनको बंडलों में बांधने में पूरे दो दिन लगे थे। खेत में कटे गेहूँ की ढ़ेरियाँ हरी घास पर बने फूस के साफ-सुथरे घरों-से लग रहे थे। पर वह हरी नज़र आने वाली चीज़ घास थी ही नहीं, वह तो तिपतिया थी। पिता ने गेहूँ के ऊपर तिपतिया के बीज भी तब छितरा दिए थे जब गेहूँ के पौधे चार इंच बर्फ़ से ढके थे। और अब तिपतिया चार इंच ऊँची हो चुकी थी। वह अभी और बढ़ने वाली थी, इतनी कि उसे दो बार काटा जा सके। इससे हमारे जानवरों के लिए चारा तो होगा ही और कुछ बचेगा भी, जिसे बेचा जा सकेगा।

गेहूँ को चमकती धूप के नीचे कुछ दिन सूखना पड़ता है, तब ही तो दाने कठोर होते और सूखते हैं। हम उन्हें हर दिन नाखूनों से जाँचा करते थे। एक रात हमने पिता से कहा कि गेहूँ मंडई के लिए तैयार हैं। उन्होंने भी यह माना।

थ्रैशिंग का दिन एकदम साफ़ और गरम था। हमारे पड़ौसी हर दिशा से घोड़ों से जुती गाड़ियों में आने लगे। सारे पुरुष खेत में पिता की मदद करने वाले थे। वे अपने किसानी के कपड़े पहने थे – ओवरऑल, और काम करने वाली कमीज़ें। महिलाओं ने लम्बी पोशाकें पहनी थीं और उनके ऊपर अपनी सबसे सुन्दर छापे एप्रन। वे पूरी सुबह खाना बनाने में माँ की मदद करने वाली थीं। रॉबी और मुझे भी रसोईघर में मदद करनी थी।

महिलाओं के लिए यह छुट्टी का सा दिन था। हालांकि उन्हें माँ की मदद तो करनी थी, पर वे काम करने के साथ आपस में गपशप का मज़ा भी उठा सकती थीं। उनके बहुत छोटे बच्चे घर में दादियों या नानियों या फिर बड़े भाई-बहनों के साथ थे, जो उन्हें संभालने के साथ घर के सुबह के काम-काज निपटाने वाले थे। दादा ग्रीन ने वादा किया था कि वे सभी बच्चों और उनकी देखरेख करने वाली नानियों-दादियों को दोपहर लेते आएंगे, ताकि वे भी हमारे साथ खाना खा सकें।

तकरीबन नौ बजे, जब ओस सूख गई, भाप के इंजन ने दिन की पहली सीटी बजाई। यह मंडई शुरू होने का संकेत था।

कुछ औरतें अपने साथ पाई (केकनुमा मीठा पकवान) लाई थीं - सेवों वाला, या किशमिश वाला, या फिर बेरियों से बना। कुछ दूसरी स्वादिष्ट केक लाई थीं - चॉकलेट या नारियल या फिर गुड़-अदरक से बना। उन्हें मक्खियों से बचाने के लिए जाली की अल्मारी में रखते-रखते हमें तो भूख ही लग आई। पर खाने के समय के पहले हम उनका एक टुकड़ा चख तक नहीं सकते थे। माँ का हुक्म जो था।

रॉबी और मैंने माँ की मदद एक बड़े से हाँडे में शिकंजी बनाने में की। हम पम्पघर से ठंडा पानी लाए। नीम्बू काटने के पहले हमने उन्हें सख़्त सतह पर गोल-गोल घुमाया ताकि वे मुलायम और रसदार हो जाएं और उनका तेल निकल आए। रॉबी ने कप से भर-भर कर चीनी डाली और मैं लकड़ी की कड़छुल से उसे हिलाती गई। तब हमने उसमें बर्फ़ मिलाई। शिकंजी की सुगंध ने हमारी प्यास जगा दी। पर हमने उसे बस थोड़ा-थोड़ा चखा, यह जाँचने कि वह ठीक-से मीठी हो चुकी है या नहीं। शिकंजी पहले खेतों में काम कर रहे पुरुषों को पिलाई जाने वाली थी - यह भी माँ का हुक्म था।

दिन धीरे-धीरे गरमाता गया था। पुरुष खेत में गीली टाट में लिपटा पानी का एक पीपा ले गए थे। पर वह तो अब तक खत्म हो चुका होगा।

सो हम शिकंजी से भरे जग थ्रैशिंग के काम में लगे पुरुषों के पास ले गए। वे भूसे से लिपटे थे। भूसा उनकी नाक तक में घुस रहा था। कुछ ने अपने चेहरे लाल या नीले छपे रुमालों से ढक रखे थे। उन्होंने वे उतारे उनसे अपने चेहरे साफ किए और तब जग उठाए।

हमने देखा कि हमारी उम्दा शिंकजी पीते वक़्त उनके टेंटुए ऊपर-नीचे नाच रहे थे। उन्होंने हमें शुक्रिया कहा। यह भी कि वे इतने प्यासे हो चुके थे कि अगर हम शिकंजी न लाते तो शायद काम ही बन्द हो जाता।

सबके पी लेने के बाद आख़िर में रॉबी और मेरी बारी आई। हमें शिकंजी पीने का मौका बिरले ही मिलता था, नीम्बू मंहगे जो होते थे, और हमें उसका मीठा स्वाद बहुत ही पसन्द था। पहले मैंने जग पकड़ा और रॉबी ने पिया। तब रॉबी ने मुझे पिलाया। सचमें वह बड़ा ही बढ़िया था।

माँ की मदद करने लौटने के पहले हम कुछ देर पुरुषों को काम करते देखते रहे।

काम व्यवस्थित तरीके से चल रहा था। तीन टोलियाँ ढ़ेरियों में रखे गेहूँ को थ्रैशर तक ला रही थीं। हरेक टोली अपनी गाड़ी को एक से दूसरी ढ़ेरी तक लाती। नोकदार पंजों से दो पुरुष गेहूँ को गाड़ी में भरते। जब गाड़ी ठेठ ऊपर तक भर जाती वे गाड़ी को थ्रैशर तक लाते, जो एक जगह स्थिर खड़ा था। एक गाड़ी थ्रैशर पर होती, दूसरी खेत में लौट रही होती, और तीसरी थ्रैशर की ओर आ रही होती।

जो लोग थ्रैशर के पास खड़े थे वे मशीन में गेहूँ को डाल रहे थे। वहाँ हर ओर पुआल और भूसा था - जिसे दानों से अलग कर दिया गया था। निकले हुए गेहूँ के दानों को धातु की एक नली से बोरों में भरा जा रहा था। पिता एक मुड़ी नोक वाले सूए से बोरों को सी रहे थे।
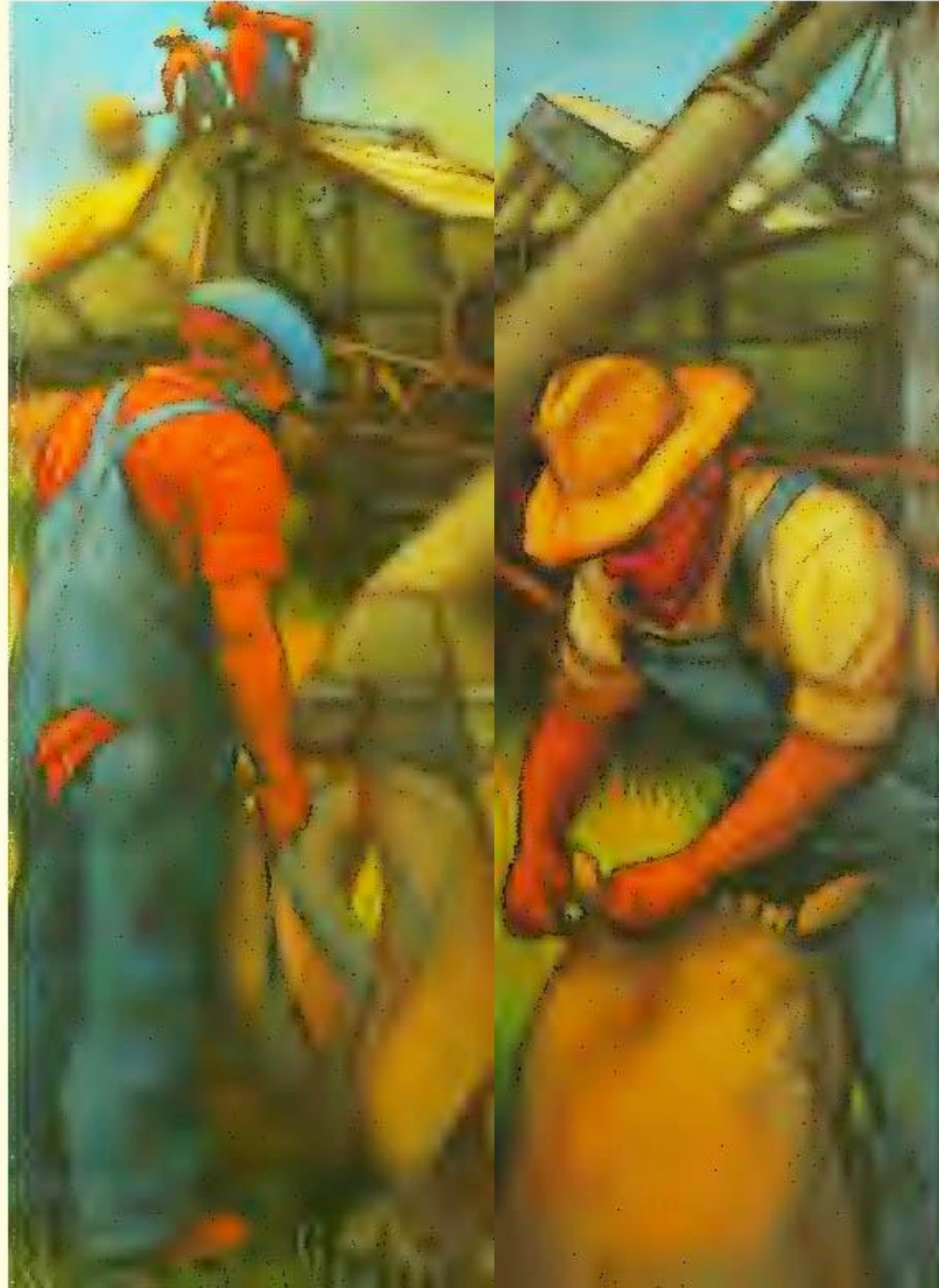
दो लोग एक और गाड़ी में बोरे लाद रहे थे, ताकि उन्हें मिल (चक्की) तक ले जाया जा सके। एक गाड़ी पर बोरियाँ लादी जा रही थीं, दूसरी चक्की पर बोरे उतरवा रही थी, और तीसरी चक्की से वापस खेत की ओर लौट रही थी।

थ्रैशर से निकला फूस एक बड़ी नली से निकल कर एक ढ़ेरी बना रहा था, जो धीरे-धीरे ऊँचा होता जा रहा था। पिता ने कहा कि सांझ होने तक वह एक पहाड़ बन जाएगा। रॉबी ओर मेरी योजना यह थी कि हम उस पहाड़ से नीचे फिसलेंगे।

तकरीबन ग्यारह बजे माँ ने कहा कि घर के सामने वाले मैदान में पेड़ों की छाँव तले मेज़ें लगाने का समय हो गया है। पिता ने पहले ही खलिहान के सरकने वाले दरवाज़ों को लकड़ी के पायों पर रख दिया था। रॉबी और मैंने उन पर ताज़ी धुली चादरें बिछाईं। मैंने रॉबी से कहा, "चादर को अपनी ओर इतना मत खींचो!" वह पलट कर चीखा, "तुम चादर को अपनी ओर ठीक से पकड़ कर रखो!"

तब दो महिलाओं ने खाने के कमरे वाली मेज़ को बाहर लाने में हमारी मदद की। मैं उसे और बड़ा करने वाले पल्लों को भी ले आई। हमने इस मेज़ पर माँ का सबसे सुन्दर मेज़पोश बिछाया।

पर सभी लोगों को बैठाने के लिए जगह अब भी काफ़ी न थी। सो रॉबी ने लकड़ी के नुकीले पायों को ज़मीन में गाड़ने में मदद की और मैंने महिलाओं की मदद से अल्मारी के किवाड़ों को उनके कब्ज़ों से निकाला। हम किवाड़ के दोनों पाटों को बाहर लाए और उन्हें पायों पर टिकाया और उन पर भी दो बड़ी चादरें बिछा दीं।

ठीक सोढ़े ग्यारह बजे भाप के इंजन ने सीटी बजा खाने की छुट्टी का ऐलान किया। पुरुष खेतों से अपने घोड़ों के साथ लौटे, और खाने पर नज़र डालते घर के पिछवाड़े की ओर बढ़ गए। पिछवाड़े एक हैंडपम्प था और पानी की नांदें भी। मुझे घोड़ों को पानी पीते समय सिसकारते और पानी पर लहरें बनाते देखना अच्छा लगता है। पुरुषों को हाथ-मुँह धोते देखना भी मज़ेदार होता है। वे चुल्लुओं में पानी भर चेहरे पर छपकाते हैं, आपस में हंसी-मज़ाक करते हैं। कुछ तो अपना पूरा खोपड़ा ही पानी की धार के नीचे कर देते हैं। तब उन्होंने खुद को उन तौलियों से सुखाया जो रॉबी और मैंने शहतूत के पेड़ पर लटकाए थे। अब वे खाना खाने को तैयार थे।

महिलाएं बड़े फ़क्र के साथ खाने की मेज़ों के पास खड़ी थीं। उनके हाथों में पत्तेदार टहनियाँ थीं, जिनसे वे मक्खियाँ उड़ा रही थीं। दूसरे साधारण दिनों में भी किसान दिन का सबसे बड़ा खाना दोपहर को ही खाते हैं। पर आज का खाना तो असाधारण ही था।

खाने में गाय का भुना माँस, तली मुर्गी, सूअर के माँस के टुकड़े, आलू का चोखा, शोरबा, पत्ता गोभी का सलाद, कीमे से बना सॉसेज, तली भिंडी, हरी सेम, उबला मक्का, कटे हुए टमाटर, हरी शिमला मिर्च, सेमफली का सूप, आलू का सलाद, फलों का सलाद, भुना प्याज़, हरे पत्ते, तली शकरकंद, ताज़ी बनी मक्के की डबलरोटी, गेहूँ की डबलरोटी थी। और मीठे के नाम पर था डबलरोटी का मीठा, और किस्म-किस्म के पाई और केक जो महिलाएं लाई थीं। साथ में तीन कस्टर्ड पाई भी थे जो माँ ने बनाए थे।
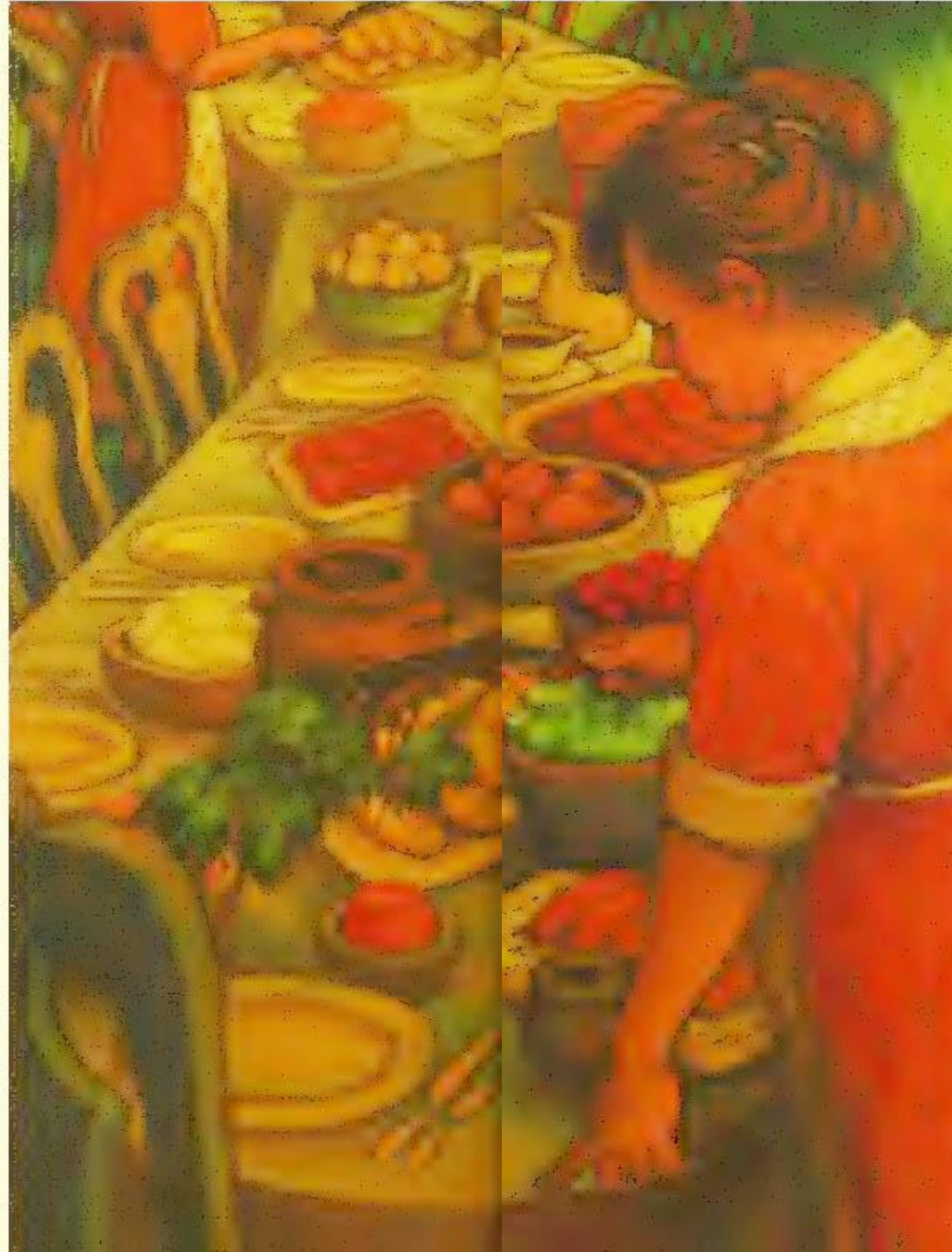
हालांकि हमने बहुत मेहनत की थी, पर आज रॉबी और मुझे पुरुषों को खा लेने तक इन्तज़ार करना पड़ा। माँ का हुक्म जो था।

मेरे ज़िम्मे था पीने की चीज़ों को परोसना। पीने के लिए हमारी बनाई शिकंजी तो थी ही, साथ थी ताज़ी ठंडी छाछ, कॉफी, बर्फ़ वाली चाय और ठंडा पानी। मैं एक बड़े से कलछुड से सबको उनके पसन्द का पेय दे रही थी। माँ ने तारीफ़ कर कहा कि मैंने काम बख़ूबी किया।

रॉबी को अपनी जेबी छुरी से पाई काटने का काम दिया गया। माँ ने कहा कि उसने भी अच्छी तरह काम किया। पर जब मैं उसे यह बताने गई तो वह गायब हो चुका था। मैं सबको पेय देने में उलझ गई और उसे ढूंढने न जा सकी।

जब सारे पुरुष सब कुछ दूसरी ओर तीसरी बार परोस कर खा चुके वे खेतों में काम पर लौट गए। काम शुरु होने की तीसरी सीटी ठीक तब बजी जब दादा ग्रीन नानियों-दादियों और लगभग दो दर्जन बच्चें को अपनी पुरानी फूस ढोने वाली गाड़ी में बैठा कर लिवा लाए। वे सब भी भूखे थे।

उनके साथ रॉबी और मेरे खाने का वक़्त भी हो चुका था। मैंने सोचा कि सारा खाना खत्म हो उसके पहले उसे ढूंढ़ लाऊं। मैंने उसे हर ओर ढूंढ़ा, वह आखिरकार मुझे एक मेज़ के नीचे मिला। उसने एक किशमिश वाला पाई उठा लिया था और मेज़ के नीचे छिप पूरा का पूरा चट कर गया था।

"तुम बीमार पड़ोगे," मैंने उसे कहा।

"मुझे बस अकेला छोड़ दो," उसने जवाब में कहा।

रॉबी कुछ और खा नहीं सकेगा, यह सोच मैं लौटी और बाकी बच्चों के साथ खलिखान के दरवाज़ों से बनी मेज़ पर खाने बैठ गई।

मुझे अफ़सोस हुआ कि रॉबी इतनी स्वादिष्ट चीज़ें खा नहीं सकेगा। मैंने सब कुछ थोड़ा-थोड़ा खाया। सब इतना बढ़िया था! कुछ भी इतना अच्छा कभी नहीं लगता जितना मंडई के दिन लगता है।

जैसे ही बच्चों को खाना परोस दिया गया महिलाएं भी खाने बैठ गईं। वे देर तक खाने के साथ हंसती, बतियाती, गपशप करती रहीं।

खाने के बाद हम लड़कियों ने सामान उठाने-धरने और सफ़ाई करने में महिलाओं की मदद की, और लड़के खेत में मंडई करते पुरुषों को देखने गए। आख़िर किसी दिन वे भी अपने खेतों की देखभाल करने वाले थे, और उन्हें काम कैसे किया जाता है, यह जानना ज़रूरी था। दादा ग्रीन सभी महिलाओं और बच्चों को घर छोड़ने गए ताकि वे अपने शाम के काम निपटा सकें।

तकरीबन तीन बजे तक रॉबी का पेट कुछ संभला, तब हम दोनों फिर से शिकंजी के जग ले प्यासे पुरुषों के पास पहुँचे। फूस का ढ़ेर अब एक सुनहले पहाड़ में तब्दील हो चुका था। पर पिता ने कहा कि उस पर से फिसल पाने के लिए हमें कुछ दिनों इन्तज़ार करना होगा, ताकि हम अन्दर न धंस जाएं। हमने फिर भी उसे जाँचा और हम घुटनों तक धंस गए। हमें मानना पड़ा कि फिलहाल उस पर से फिसला नहीं जा सकता।

सो हम खरगोशों के पीछे दौड़े।

हमें किलडियर (एक प्रकार की बड़ी चिड़िया) के कुछ अंडे मिले।

जब मिसेज़ स्नाइडर और उनका बेटा भाप के लिए पानी और लकड़ी लाने गए, हमने उनकी गाड़ी में सवारी की। जब मिस्टर स्नाइडर इंजन के अलाव में लकड़ी झोंक रहे थे हमने उसका ताप महसूस किया। ज़्यादातर पुरुष गरम इंजन के पास बस कुछ ही देर रुकते थे, पर मिस्टर स्नाइडर वहाँ पूरे दिन खड़े रहे थे।

हम घर भागे और कुछ देर हमने शहतूत के पेड़ की छाँव में आराम किया।

तब हमने तय किया कि शायद पुरुषों को और शिकंजी चाहिए होगी, सो हम दोपहरी के खाने के बाद दूसरी बार शिकंजी के जग लिए वहाँ पहुँचे। इस बार मैंने बिस्कुटों का एक डब्बा भी ले लिया था। पुरुषों ने कहा कि हम सबसे बढ़िया शिकंजी बनाते हैं, और बिस्कुट भी बहुत ही स्वादिष्ट हैं। पिता ने हमारी तारीफ़ की, कहा कि हम अच्छे मददगार हैं। यह भी कि उन्हें हम पर फ़क्र है।

मैं तीन गद्दों के खोल ले कर आई, मेरा, रॉबी का और एक बड़ा हमारे माता-पिता का। हमने उनमें ताज़ा फूस भरने में मदद की। एक पुरुष गद्दों को घर तक ढ़ो लाया।

जब तक सूरज एक लाल गेंद में तब्दील हो पश्चिम में ढ़ला खेत की सारी ढ़ेरियाँ हट चुकी थीं। पिता ने थ्रैशर मशीन को आख़िरी बार भरा। इसके बाद भाप के इंजन ने उस दिन की चौथी सीटी बजाई। काम पूरा हो चुका था!

सभी पुरुष अपने-अपने खेतों को लौट चुके थे। स्नाइडर दम्पति अपने मंडई की मशीन और उपकरणों को ले सबसे आख़िर में सड़क पर बढ़ा।
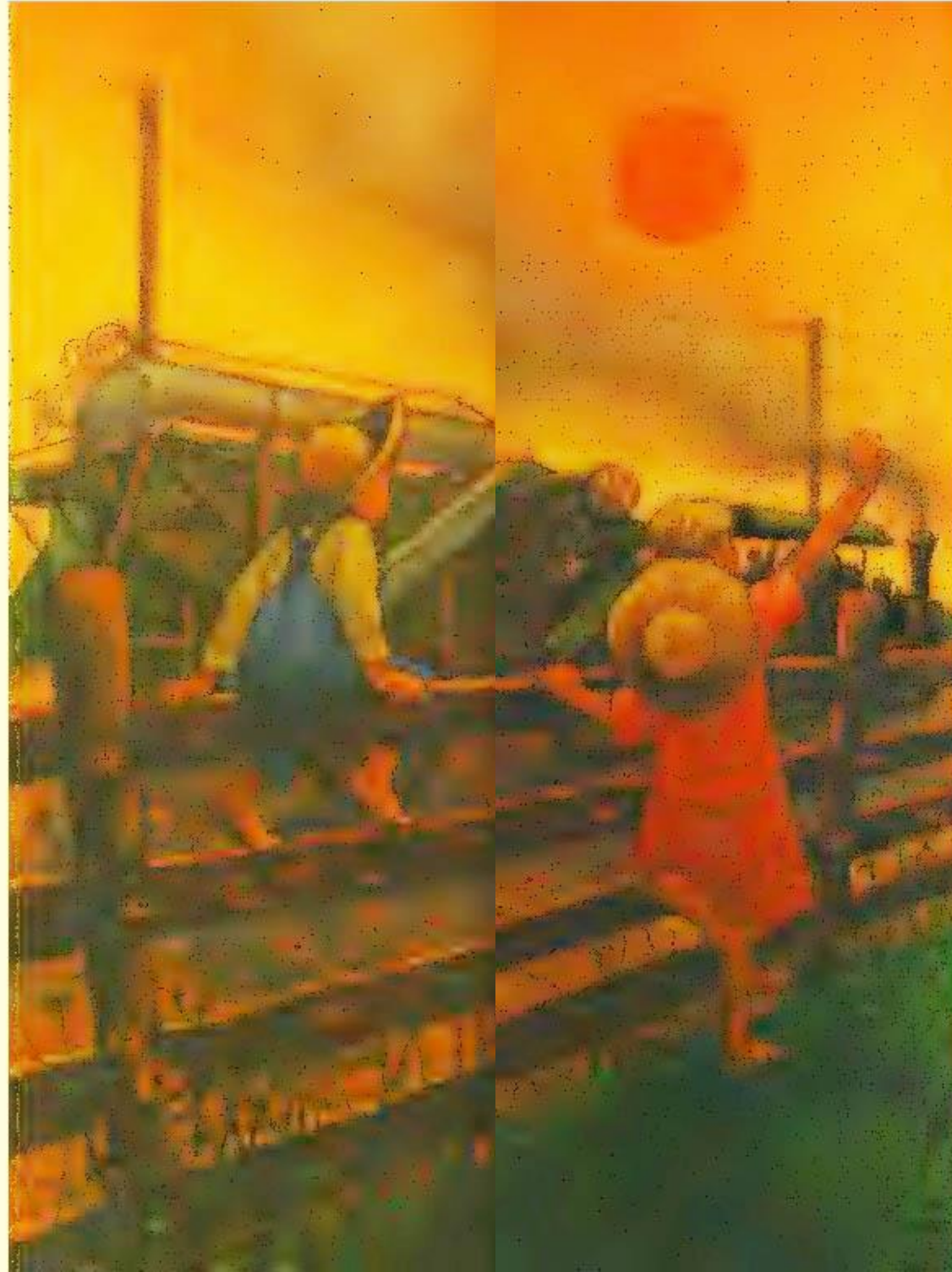
रॉबी ओर मैंने शाम के कामों में मदद की। मैंने मुर्गियों को चुग्गा दिया, अंडे इकट्ठे किए, और मंर्गियों के दड़बे का किवाड़ ठीक से बन्द किया। रॉबी ने गायों और घोड़ों को चारा-सानी देने में पिता की मदद की, पानी और लकड़ी घर पहुँचाई। माँ ने गायों को दुहा, दूध को छान कर मिट्टी के मर्तबानों में रखा और तब उन्हें पानी से भरी नांद में, ताकि दूध ठंडा रहे।

रात का खाना और भी लज़ीज़ लगा क्योंकि दिन के खाने से बहुत कुछ बचा हुआ था। रॉबी के लिए सब कुछ चखने का यह पहला मौका था, सो वह बहुत खुश हुआ। पर उसने पाई को छुआ तक नहीं।

रात के खाने के बाद रॉबी पिछवाड़े रखे सबसे बड़े टब में नहाया, जिसका पानी दोपहर की धूप में गरमाता रहा था। उसने नहा कर रात के कपड़े पहने। तब मैं नहाई।

"कल मैं मिस्टर एपल के गेहूँ की मंडई में मदद करने जाऊंगा," पिता ने कहा। "पर कम से कम मुझे बर्फ़ वाले को सुबह नाश्ते के पहले जगाना तो नहीं पड़ेगा।"

चमकदार चाँद आसमान में उठ आया था। मैंने खिड़की से खेत में रखी फूस की ढेरी को आख़िरी बार देखा। "मैं उस ढेरी का नाम पीला परबत रख रही हूँ," मैंने माँ से कहा। "और मैं जल्द ही उस पर चढ़ने जाऊंगी।"

"अभी छह सप्ताह उसे सूख जाने दो," माँ ने हम दोनों को सीढ़ियों से ऊपर धकेलते हुए कहा। "आज के लिए काफ़ी मस्ती हो गई। अब दोनों अपने-अपने बिस्तर में घुसो। यह मेरा हुकुम है!"

वेर्डा क्रास का जन्म डैकस्टर, मिसूरी के एक खेत में, 1914 में हुआ था। वे तेरह बच्चों के परिवार में छठी बच्ची थीं। उनकी औपचारिक शिक्षा दसवीं कक्षा के बाद तब बन्द हो गई जब उनकी माँ की मृत्यु हुई। वेर्डा ने सोलह साल की उम्र में शादी की, दो बेटों को पाला-पोसा और बत्तीस की उम्र में वे दादी बनीं। वे और उनके पति पहले अपने खेत और उसके बाद एक मोबाइल होम पार्क का संचालन करते रहे। पचपन वर्ष की आयु में उन्होंने फिर पढ़ाई की और लाइसेंसधारी नर्स बनीं।

वेर्डा ने ज़िन्दगी भर अपने परिवार के बच्चों के लिए कहानियाँ और कविताएँ लिखी हैं। यह उनकी पहली प्रकाशित क़िताब है।

गैल अवन्स ने बच्चों के लिए लिखी गई अनेक क़िताबों को चित्रित किया है। इनमें मिशेल एमर्ट की मशहूर कृति *आई एम द बिग सिस्टर नाऊ* भी शामिल है।